B A part III (H)
Paper V

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ college Raj Nagar

Lecture VI

गोत्र का प्रकार्य एवं महत्व =)

3. बहिर्विवाही => गोत्र का महत्व बहिर्विवाह से जुड़े नियमों का पालन करवाना है। एक गोत्र के सदस्य अपने को एक समान पूर्वज की संतान मानते है। इस रूप में वे सब आपस में भाई-बहन की तरह रहते है। फलस्वरूप आपस में विवाह नहीं कर सकते। अपने गोत्र से बाहर दूसरे गोत्र से विवाह साथी प्राप्त करने का निर्देश देते है। इस तरह यौन इच्छाओं को गोत्र से बाहर पूर्ण करना होता है।

4. शासन => गोत्र अपनी शासन व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सरकार जैसा कार्य करता है। जनजातीय संगठन की रचना कुछ ऐसी होती है कि गोत्र के नियमों का विस्तृत प्रसारण होने लगता।

2020-8-14 08:42

है। सम्पूर्ण समाज की रचना इन गोत्रों की क्रियाओं का संकुल कही जा सकती है। समुदाय के हित में किये निर्माण का कार्य गोत्र के मुखिया करते हैं। इसे समाज का विधि निर्माता भी कहा जा सकता है।

5. धर्म एवं धार्मिक क्रियाएं – धर्म एवं धार्मिक क्रियाओं का गोत्र के सदस्यों द्वारा अनुपालन हो, यह देखना गोत्र का कार्य है। ए.सी. दुबे का मानना है कि टोटम की पूजा और आराधना गोत्र के सभी सदस्यों का कार्य है। इसी प्रकार पूर्वज की पूजा भी गोत्र का कार्य है। इन धार्मिक के मूल्य सदस्य भी देवता तुल्य हो जाते हैं। इन धार्मिक क्रियाओं का धर्म में समाज या अन्य धर्म का एक अविच्छिन्न अंग होना स्वाभाविक प्रक्रिया माना जाता है।

6. सम्पत्ति : गोत्र संगठित समाजों में खेत या बाग की भूमि गोत्र सम्पत्ति होते हैं। ऐसी स्थितियों में गोत्र के प्रत्येक सदस्य परिवार को भूमि के उपयोग का अधिकार देने का कार्य गोत्र के प्रधान ही करते हैं।